स्वार्थी दैत्य

जैकब अपने मित्रों के पीछे दौड़ा. उसके पाँव के नीचे सूखे पत्ते चरमरा कर कुचले जा रहे थे. उसके हाथों में उसकी स्कूल की किताबें झूल रही थीं.

"मेरी प्रतीक्षा करो," वह चिल्लाया.

मैथ्यू और रेचल के निकट पहुंचने के लिए वह खूब तेज़ दौड़ा. वह दोनों उसे पहाड़ी पर स्थित महल की ओर ले जा रहे थे. वह पहले वहाँ कभी न गया था.

नगर के किनारे आकर वह रुक गये. जैकब ने ऊपर देखा. महल बहुत ऊँचा दिखाई दे रहा था. वह विशाल और बहुत प्राचीन था और भयानक लग रहा था.

महल खाली था. खिड़कियों में अँधेरा था. दरवाज़े बंद थे. वहाँ कोई न रहता था. महल का मालिक कई वर्षों से बाहर गया हुआ था. वह इतने लंबे समय से बाहर था कि किसी को उसकी याद भी न थी.

लेकिन जैकब को उस प्राचीन, डरावने महल से भय न लगता था. महल के चारों ओर बना सुँदर बाग़ बहुत ही आकर्षक था.

हरी घास पर गर्मी के अंतिम दिनों की धूप चमक रही थी. तितलियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर मँडरी रही थीं. पेड़ों में पक्षी चहचहा रहे थे. मंद हवा में पेड़ों के पत्ते फड़फड़ा रहे थे.

जैकब, मैथ्यू और रेचल ने अपनी जैकेट और किताबें घास पर फैंक दीं. मैथ्यू और रेचल टैग खेलने लगे और बाग़ में दौड़ने लगे,

जैकब टैग न खेलना चाहता था. बाग़ के कोने में उसने एक पेड़ देखा. पेड़ की डालों पर पके हुए सुनहरी आड़ू लटक रहे थे.

वह दौड़ कर उस पेड़ के पास आया. उसने अपने हाथ ऊपर फैलाये. वह उछला. उसने एक आड़ू तोड़ना चाहा.

"तुम क्या कर रहे हो?" गरजती हुई एक आवाज़ उसने सुनी.

जैकब पीछे घूमा. फाटक के अंदर एक विशाल आदमी खड़ा था. वह तो एक दैत्य जैसा था. उसकी टांगे पेड़ के तने जैसी थीं. उसके पाँव किश्ती जैसे थे. उसकी छाती एक बैरल जैसी थी. वह इतना ऊँचा था कि उसका सिर पेड़ की सबसे ऊंची डालों को छू रहा था. वह इतना ताकतवर था कि उसके चलने से धरती कांप रही थी.

वह बहुत गुस्से में था.

“मेरे बाग़ से बाहर चले जाओ!” वह चिल्लाया.

“जी, श्रीमान!” मैथ्यू और रेचल ने कहा.

मैथ्यू और रेचल घास के ऊपर तेज़ी से भागे. उन्होंने अपनी जैकेट और किताबें लपक कर उठा लीं. वह उस दैत्य से दूर भाग गये. वह फाटक से बाहर चले गये. वह उस बाग़ से निकल भागे.

लेकिन जैकब उस दैत्य को देखता रहा.

“आपका बाग़?” उसने पूछा. “यहाँ तो कोई नहीं रहता.”

दैत्य ने उसे घूर कर देखा.

“मैं यहाँ रहता हूँ. मैं कहीं चला गया था. अब लौट आया हूँ. यह मेरा महल है. यह मेरा बाग़ है. मैं नहीं चाहता कि असभ्य बच्चे इसे बर्बाद कर दें.”

“हम कुछ भी बर्बाद नहीं कर रहे हैं,” जैकब ने कहा. “हम असभ्य नहीं हैं. यह बाग़ बहुत ही सुंदर है. हम यहाँ सिर्फ खेल रहे थे.”

“यह बाग़ मेरा है!” दैत्य चीखा. “निकलो यहाँ से!”

“आप तो, आप तो..... सिर्फ स्वार्थी हैं!” जैकब ने कहा.

उसने घास पर पड़ी अपनी जैकेट और किताबें झटके से उठा लीं. उस विशाल आदमी की ओर उसने पल भर देखा और फिर भागता हुआ बाग़ से बाहर चला गया.
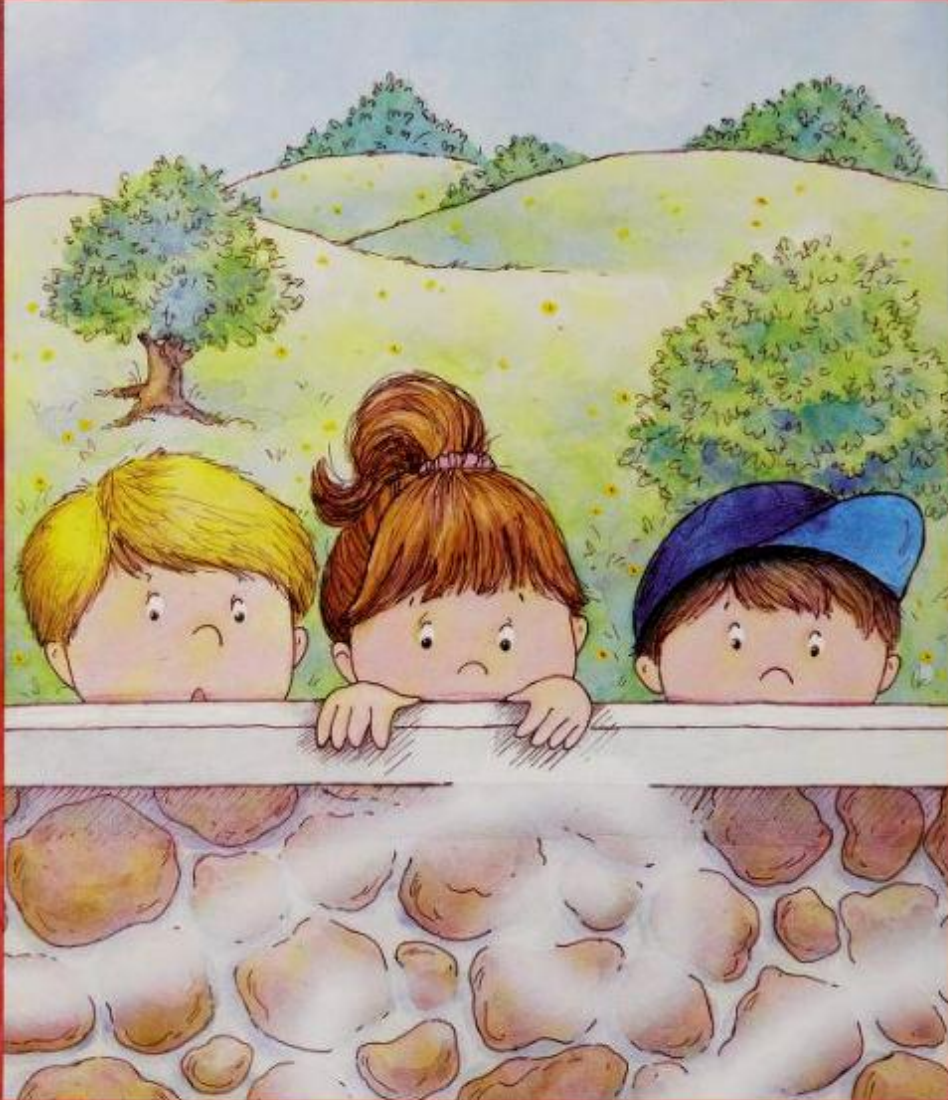
उस दिन के बाद से जैकब, मैथ्यू और रेचल महल से दूर रहे. शरद ऋतु के बाद शीत ऋतु आई. शीत ऋतु के बाद वसंत आया. जैकब और उसके मित्र स्कूल के मैदान में खेलते. वह पार्क में खेलते. वह घर के आँगन में खेलते.

लेकिन इन जगहों में खेलना वैसा न था.

“यह महल के बाग़ में खेलने जैसा नहीं है,” जैकब ने कहा.

“शायद वह दैत्य फिर से चला जाये,” मैथ्यू ने कहा.

“शायद वह पहले ही जा चुका हो,” रेचल बोली.

“हमें जाकर देखना चाहिए,” जैकब ने कहा. “बाग़ को सिर्फ देखने के लिये वह हम पर गुस्सा नहीं हो सकता.”

जैकब और उसके मित्र भागते हुए महल की ओर गये. महल अभी भी विशाल, प्राचीन और भयानक था. खिड़कियाँ अभी भी अंधेरी थीं.

लेकिन अब वह बाग़ को देख न सकते थे. दैत्य ने बाग़ के चारों ओर पत्थरों की एक दीवार बना दी थी. दीवार पर एक साइन बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था

अंदर आना मना है!

विशेष कर बच्चों के लिये

“दैत्य अभी भी यहीं है,” मैथ्यू ने कहा.

“ऐसा नहीं लगता कि वह कभी यहाँ से जायेगा,” रेचल ने कहा.

“चलो, दीवार के ऊपर से देखते हैं,” जैकब ने सुझाव दिया.

एक जगह दीवार के साथ लकड़ियों का ढेर पड़ा था. वह उन लकड़ियों पर चढ़ गये और दीवार के दूसरी ओर देखने लगे.

जो कुछ उन्होंने देखा उसने उन्हें हैरान कर दिया.

“ओह, नहीं!?” जैकब बोला.

वह बाग़ को घूर कर देखते रहे.

अंदर घास बर्फ से ढकी हुई थी. ठंडी हवा चल रही थी. पेड़ों पर पत्ते न थे. पेड़ों की डालियाँ टेढ़ी-मेड़ी थीं और काली पड़ गई थीं.

जैकब ने अपना सिर हिलाया.

“क्या हुआ?” उसने पूछा. “इस बाग़ से शीत ऋतु अभी तक क्यों नहीं गई? वसंत ऋतु क्यों नहीं आई?”

“शायद इस वर्ष अधिक ही समय ले रही है,” मैथ्यू ने कहा.

“शायद शीघ्र ही फूल खिलने लगें,” रेचल ने कहा.

हर दिन जैकब, मैथ्यू औऱ रेचल दौड़ कर महल आते. हर दिन वह लकड़ी के ढेर पर खड़े हो जाते. हर दिन वह दीवार के ऊपर से भीतर झांकते. हर दिन जैकब अपना सिर हिलाता.

बाग़ के बाहर दिन गर्म हो रहे थे. सूरज अधिक उज्जवल हो रहा था. फूल खिल रहे थे. वसंत ऋतु धीरे-धीरे ग्रीष्म ऋतु में बदल रही थी.

लेकिन बाग़ के अंदर अभी भी शीत ऋतु थी. फूल खिल न रहे थे. पेड़ों पर अंकुर निकल न रहे थे. पेड़ों में पक्षी चहचहा न रहे थे. तितलियाँ मंडरा न रहीं थीं.

आड़ू के पेड़ पर सिर्फ एक आड़ू लगा हुआ था. बाकी आड़ू ज़मीन पर गिर गये थे. वह बर्फ से झांक रहे थे. वह सूख हुए, भूरे रंग के हो गए थे.

“यह बाग़ अब आकर्षक नहीं रहा,” जैकब ने कहा.
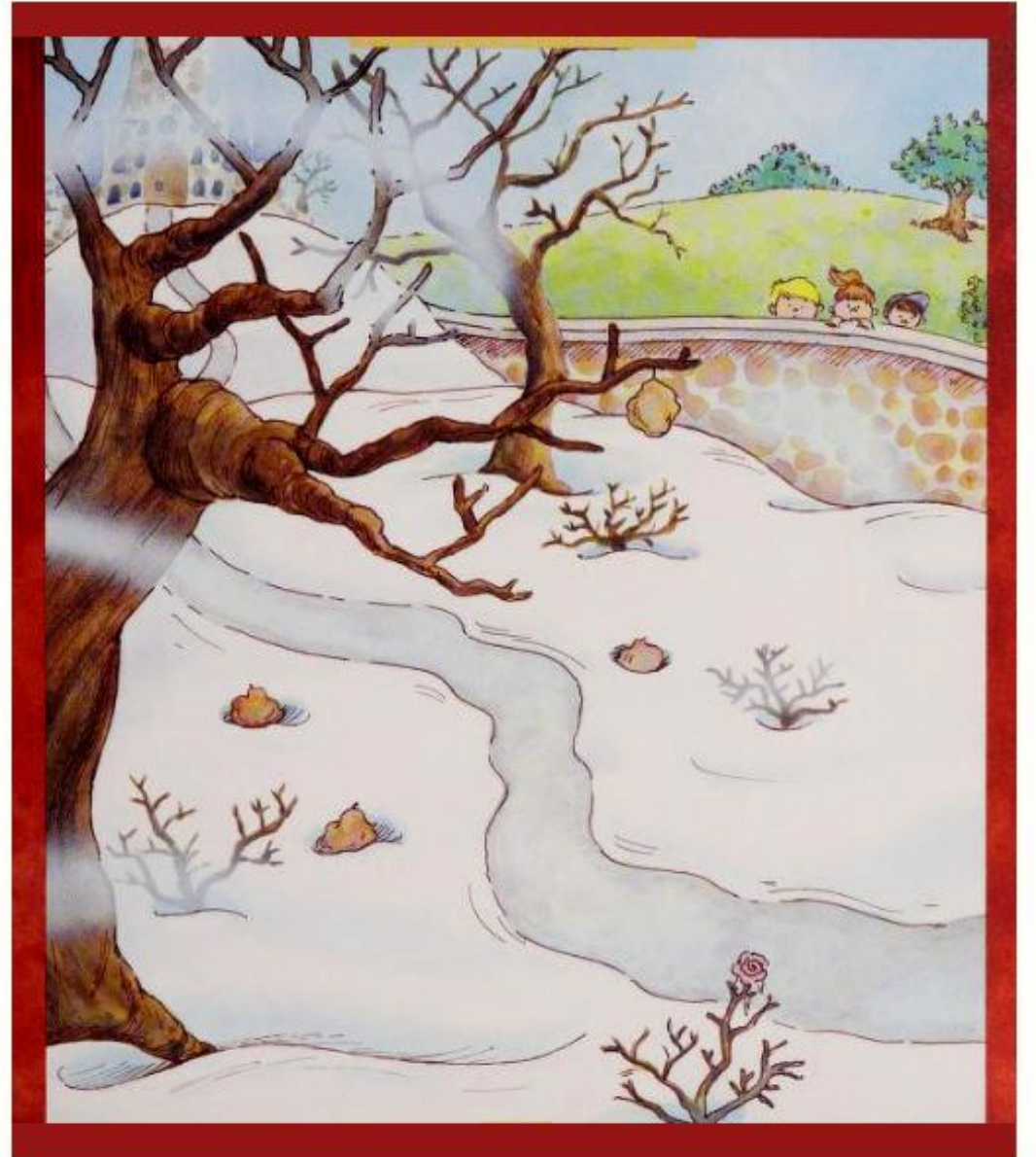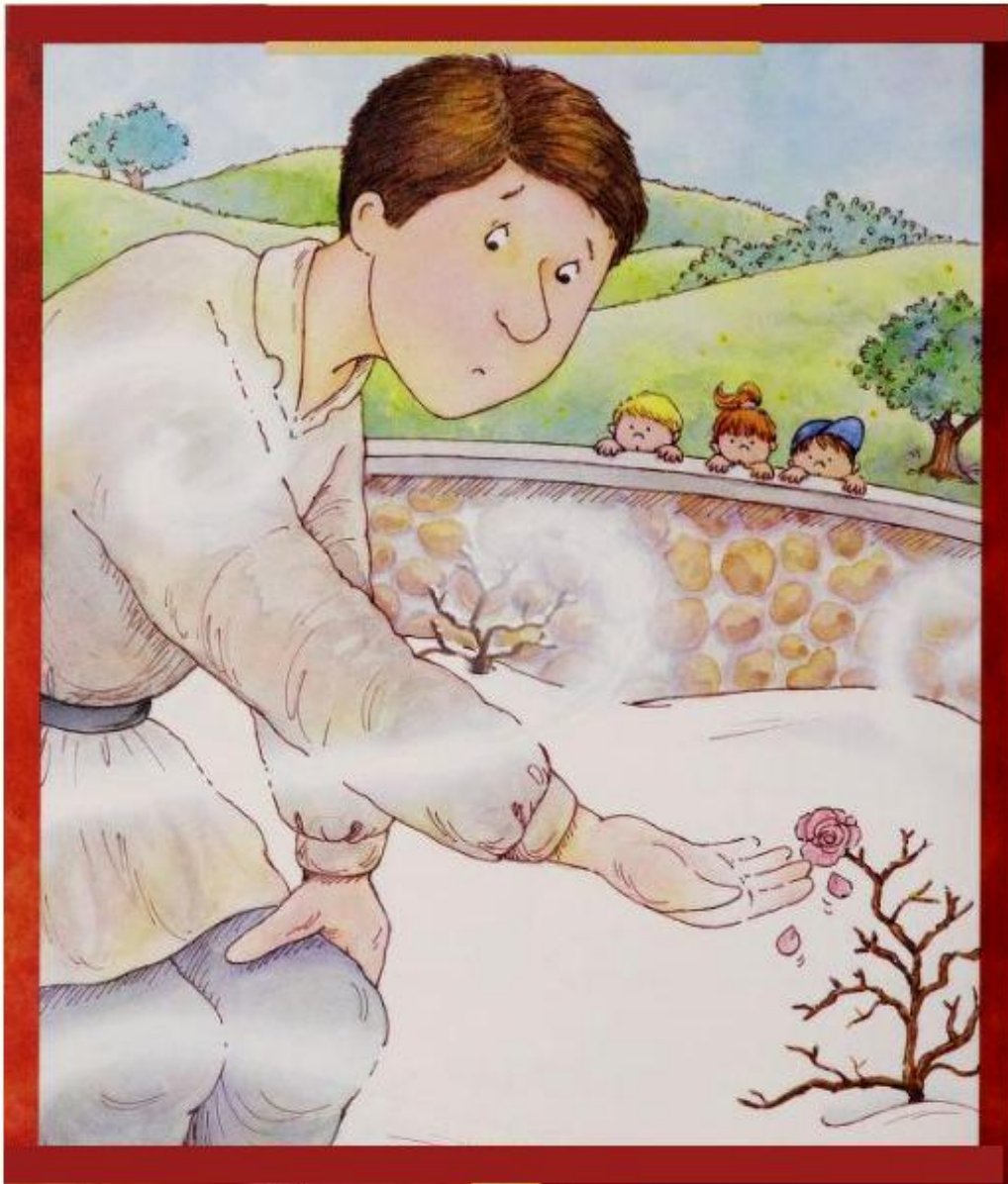
जैकब, मैथ्यू और रेचल बाग को देखते रहे. हर दिन वहाँ सब कुछ वैसा ही था. हर दिन वहाँ सर्दी ही थी.

एक दिन उन्होंने दैत्य को देखा. वह गुलाब की एक कली पर झुका हुआ था. गुलाब की एक नन्हीं कली खिलने वाली थी.

“देखो!” जैकब ने कहा. “एक फूल.”

“शायद बाग़ में वसंत ऋतु आखिर आ ही रही है,” रेचल बोली.

दैत्य उस फूल को देर तक देखता रहा. उसने झुक कर उसको छुआ. उसकी पंखुडियाँ टूट कर नीचे गिर गईं.

दैत्य ने निराशा में एक आह भरी और अपना सिर हिलाया. वह अभी भी बहुत बड़ा था. वह अभी भी बहुत ताकतवर था. लेकिन अब वह क्रोधित न था.

“वह अकेला दिखाई पड़ता है,” जैकब ने कहा.

“उसे अकेला ही होना चाहिए,” रेचल ने कहा.

“वह हम पर चिल्लाया था,” मैथ्यू ने कहा.

“और हमें भगा दिया था,” रेचल ने कहा.

“वह कितना उदास लग रहा है,” जैकब ने कहा. “हमें उसकी सहायता करनी चाहिए.”

“मैं उसकी सहायता नहीं करुंगा,” मैथ्यू ने कहा.

“मैं भी उसकी सहायता नहीं करूंगी,” रेचल ने कहा.

जैकब ने दैत्य को देखा. दैत्य अपना मुरझाया हुआ बाग़ देख रहा था. उसने कुम्हलाये हुए फूलों और नंगे पेड़ों को देखा. उसने हल्के से अपना सिर हिलाया. वह मुड़ा और वापस महल के अंदर चला गया.

“मैं आपकी सहायता करता,” जैकब ने फुसफुसा कर कहा, “अगर मैं जानता तो.”

मैथ्यू और रेचल लकड़ियों के ढेर से नीचे उतर आये.

जैकब को बहुत बुरा लग रहा था. उसने बाग़ को अंतिम बार देखा. नीचे उतरने के लिये वह पीछे घूमा.

वह लड़खड़ा गया. उसका पाँव फिसल गया और लकड़ियाँ नीचे गिरने लगीं. उसने दीवार पर पाँव मारे. उसने सभंलने का प्रयास किया. पाँव मारने पर दीवार का एक पत्थर हिलने लगा.

"देखो," जैकब ने कहा. "यह पत्थर ढीला है."

मैथ्यू और रेचल ने उस पत्थर को हिलाने में उसकी सहायता की. उन्होंने उसे हिलाया. उसे खींचा. उसे झटका दिया. चटाक से पत्थर दीवार से अलग हो गया.

वह सब पीछे घास पर लुढ़क गये. वह पत्थर को एकटक देखने लगे. दीवार में बने उस सुराख को वह देखने लगे जहाँ पत्थर लगा हुआ था. वह सुराख दीवार के आर-पार था और उसके दूसरी ओर बाग़ दिखाई दे रहा था.

"क्या इस सुराख के रास्ते अंदर चलें?" मैथ्यू ने पूछा.

"हाँ," रेचल ने कहा. "अगर तुम भयभीत नहीं हो तो."

"मैं भयभीत नहीं हूँ," मैथ्यू ने कहा. "क्या तुम भयभीत हो?"

"मैं भयभीत नहीं हूँ," रेचल ने कहा. "क्या तुम भयभीत हो, जैकब?"

"नहीं," जैकब बोला. "मैं भयभीत नहीं हूँ."

"ठीक है," रेचल बोली. "फिर तुम पहले अंदर जा सकते हो."

जैकब ने निर्भीक दिखने का प्रयास किया. उसने सुराख के अंदर देखा. वह उसके अंदर घुस गया. रेंगते हुए वह दूसरी ओर चला गया.
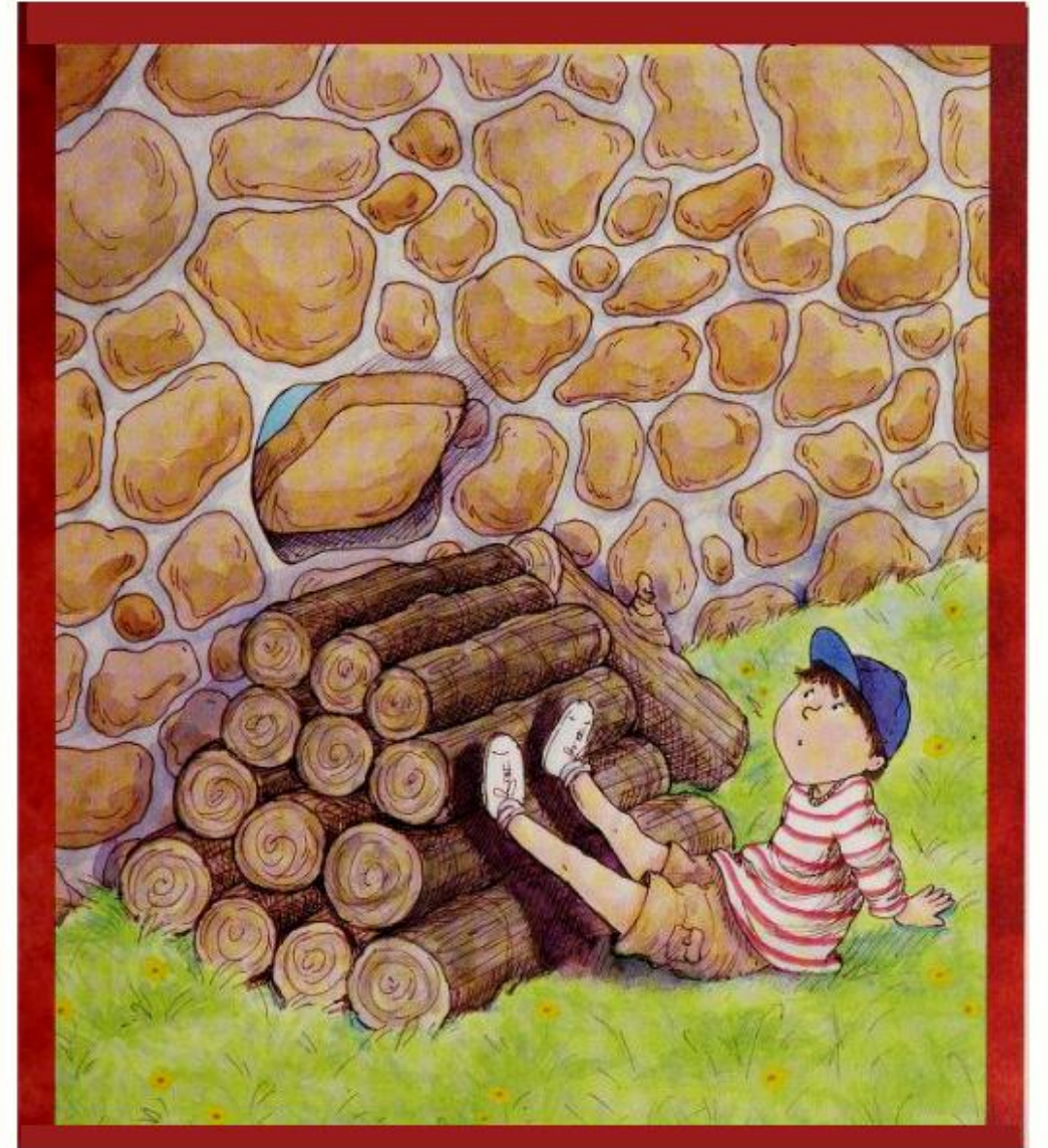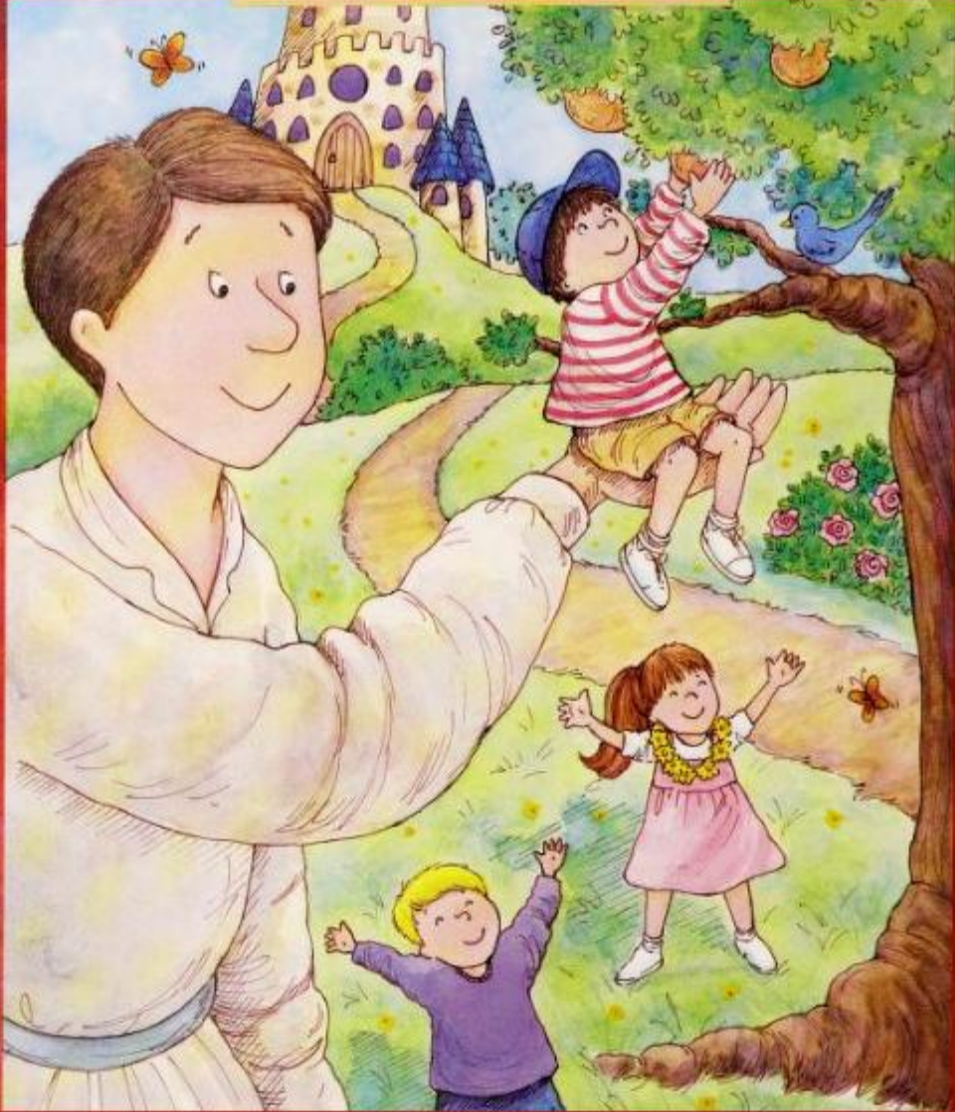
जैकब बाग़ के अंदर आ गया. मैथ्यू और रेचल भी उसके पीछे भीतर आ गये.

पेड़ों के बीच से हवा सनसनाती हुई चल रही थी. उनके पैरों के नीचे बर्फ थी. नाक से बाहर आती उनकी सांसें सफेद बादल के नन्हें-नन्हें टुकड़ों जैसी लग रही थीं. वह कांप रहे थे. वह बहुत उदास थे.

“हमें शायद लौट जाना चाहिए,” मैथ्यू ने कहा.

“दैत्य हम पर फिर चिल्लायेगा,” रेचल ने कहा.

“मुझे नहीं लगता वह ऐसा करेगा,” जैकब ने कहा.

“वह हम सब पर चिल्लाएगा,” मैथ्यू बोला.

“हम ने उसके बाग़ की दीवार तोड़ दी है,” रेचल ने कहा.

“नहीं, वह नहीं चिल्लायेगा,” जैकब ने कहा. “हम इस कोने में इस आड़ू के पेड़ के पास खड़े रहेंगे. दैत्य हमें देख भी न पायेगा. पेड़ की ड़ालियाँ हमें छिपा कर रखेंगी.”

“ठीक है,” मैथ्यू ने कहा.

“लेकिन यहाँ थोड़े समय ही रहेंगे,” रेचल ने कहा.

मैथ्यू और रेचल बर्फ के पुतले बनाने के लिए दौड़े.

जैकब बर्फ के पुतले न बनाना चाहता था. वह आड़ू के पेड़ को एकटक देखता रहा. वह पेड़ पर लगे अकेले आड़ू को देखता रहा. आड़ू पेड़ की सबसे ऊंची डाल से लटक रहा था.

उसने अपने हाथ ऊपर फैलाये. वह उछला. उसने आड़ू तोड़ना चाहा.

“तुम उसे ऐसे तोड़ न पाओगे,” एक गरजती आवाज़ उसे सुनाई दी.

एक विशाल हाथ ने उसे पकड़ कर ऊपर उठा लिया. उसे उठा कर हाथ उसे पेड़ की सबसे ऊंची डाल तक ले आया.

जैकब पीछे घूमा. वह सीधा स्वार्थी दैत्य की आँखों में देख रहा था.

“ओह!” जैकब बोला.

दैत्य उसकी ओर मुस्कराया.

उसे उठा कर दैत्य पेड़ के ऊपर ले गया. उसने जैकब को स्थिर पकड़े रखा. जैकब ने हाथ आगे बढ़ाया. उसने सबसे ऊंची डाल पर लगा आड़ू तोड़ लिया.

“धन्यवाद,” जैकब ने धीमे से कहा.

“नहीं,” दैत्य बोला. “तुम्हारा धन्यवाद.”

दैत्य ने आड़ू के पेड़ की ओर संकेत किया. उसकी डालों पर नए अंकुर निकल आये थे. फिर वह पत्तों में बदल गए थे.

जैकब उन्हें एकटक देख रहा था. उसने मुड़ कर बाग़ को देखा.

जहाँ रेचल और मैथ्यू खेल रहे थे वहाँ बर्फ पिघल गई थी और हरी घास उग आई थी. बादलों के पीछे छिपा सूर्य बाहर निकल आया था. घास के ऊपर तितलियाँ मंडराने लगी थीं. पेड़ों पर पक्षी चहचहाने लगे थे. बाग में हर जगह फूल खिलने लगे थे.

“आखिरकार वसंत आ ही गया!” जैकब ने कहा.

“हाँ,” उस विशाल आदमी ने कहा. “तुम इसे ले कर आये. तुम मेरे और मेरे बाग़ के लिए खुशियाँ ले कर आए. और यह खुशियाँ वसंत ले आईं.”

उस दिन के बाद से जैकब, मैथ्यू और रेचल हर दिन बाग़ में आते. उन्होंने दैत्य को टैग खेलना सिखाया. आड़ू तोड़ने के लिए दैत्य उन्हें उठा कर पेड़ के ऊपर ले जाता. वह आड़ू तोड़ कर खाते और तितलियों का पीछा करते.

बाग़ में गर्मी आई, फिर पतझड़ आया, फिर सर्दी आई. लेकिन सर्दी बाग़ में रुकी नहीं. बर्फ पिघल गई. सूर्य चमकने लगा.

हर वर्ष वसंत लौट कर उस बाग़ में आया.

समाप्त